प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पुराने ज्ञान को आधुनिक कृषि में समावेशित करना आवश्यक: डा. जे. कुमार

पंतनगर। २९ अगस्त, २०१७। हमें कृषि के अपने पुराने ज्ञान को खोजकर आधुनिक कृषि में समावेशित करना होगा तभी हम कृषि को समगतिशील बनाकर किसान को भी खुशहाल कर पायेंगे। यह बात आज पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार, ने विश्वविद्यालय के रतन सिंह सभागार में आयोजित 'पारम्परिक कृषि में नवीनता का समावेश : मानवता को बचाने का विकल्प' कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कही। इस सत्र के मुख्य अतिथि फाउंडेशन के एमेरिटस अध्यक्ष, डा. वाई. एल. नेने, थे। इस अवसर पर फाउंडेशन के संस्थापक ट्रस्टी, डा. एस.पी.एस. बेनीवाल; कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डा. एन.एस. मूर्ति; एवं कार्यशाला की आयोजक, डा. सुनीता टी पांडे, भी मंचासीन थीं। कार्यशाला का आयोजन कृषि महाविद्यालय में स्थित एशिएन एग्री-हिस्ट्री फाउंडेशन के उत्तराखण्ड चैप्टर द्वारा किया गया।

डा. जे. कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि उत्पादन ३.७७ गुना बढ़ने तथा खाद्य सुरक्षा प्राप्त कर लेने के बावजूद भी भारत के किसानों की हालत नहीं सुधर पायी है। उन्होंने कहा कि कृषि एवं अन्य रोजगारों से प्राप्त आय का अनुपात १:४ हो गया है, जो दर्शाता है कि कृषि उत्पादन बढ़ाने वाले किसान ही आय में पीछे छूट गये है। डा. कुमार ने इसका एक बड़ा कारण कृषि की पुरानी पद्धतियों, जैसे मिलवां खेती, फसल-चक्र इत्यादि को त्यागकर केवल उत्पादन-वृद्धि आधारित कृषि को अपनाना है। आधुनिक कृषि का मुख्य आधार उच्च उत्पादक प्रजातियां तथा उर्वरक एवं पानी, जिनपर सब्सिडी प्रदान की जाती है, का अत्यधिक प्रयोग है। इन सब के कारण देश की ६० प्रतिशत खेती की भूमि आज खेती के लिए अनुपयुक्त होती जा रही है। कुलपति ने कहा कि इस बीच कृषि को टिकाऊ बने रहने की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया, जिसका यह परिणाम हुआ है। डा. कुमार ने किसानों की आय वर्ष २०२२ तक दुगनी करने की प्रधानमंत्री की योजना के बार में जिक्र करते हुए पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा इसमें निभायी जाने वाली भूमिका की जानकारी दी तथा खेती को टिकाऊ बनाने के लिए पंतनगर के प्रयासों से भी अवगत कराया।

डा. वाई.एल. नेने ने कहा कि इस फाउंडेशन की स्थापना का बीज उनके मस्तिष्क में वर्ष १९७७ में ही बोया जा चुका था जब ईरान में आयोजित एक संगोष्ठी में एक विदेशी वैज्ञानिक ने उनसे भारत की पारम्परिक कृषि के ज्ञान की अनुपलब्धता की शिकायत की। उन्होंने कहा की यह फाउंडेशन देश के विभिन्न प्रदेशों में उपलब्ध पुराने साहित्य को ढूंढ कर व उसका विश्लेषण कर उसकी खासियतों को आज की कृषि में समावेश करने की संभावनाओं को देख रही है, ताकि आधुनिक कृषि की बुराईयों को दूर कर उसे टिकाऊ बनाया जा सके। डा. नेने ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों में उनके आग्रह पर भारतीय कृषि की विरासत पर एक नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए आभार प्रकट किया, जिससे विद्यार्थियों को देश की पुरानी कृषि पद्धतियों एवं उनके लाभों की जानकारी प्राप्त होगी।

डा. एस.पी.एस. बेनीवाल ने भारतीय कृषि के पुरातन ज्ञान को विद्यार्थियों द्वारा जानने, पढ़ने एवं प्रयोग में लाने की बात कही। उन्होंने इसमें शोध की बहुत संभावनाएं बतायी। डा. बेनीवाल ने ग्रामों के अभ्युदय से देश के अभ्युदय की भारतीय कृषि की संकल्पना को आज भी सही बताते हुए वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को अपनी सोच इसी दिशा में रखने के लिए कहा। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. एन.एस. मूर्ति ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनों का स्वागत किया। डा. सुनीता टी. पांडे ने फाउंडेशन की स्थापना व उद्देश्यों तथा कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में फाउंडेशन के पंतनगर चैप्टर के उपाध्यक्ष, डा. केवलानन्द, ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर फाउंडेशन के उत्तराखण्ड चैप्टर के न्यूजलैटर के तृतीय वर्ष के दूसरे अंक का मंचासीन अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। कार्यशाला में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त किसान, पद्मश्री सुभाष पालेकर, विजय जड़धारी, तारा चंद बेलजी, के अतिरिक्त उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों से आये किसान, गैर-सरकारी संगठन, वैज्ञानिक, योजनाकार, अधिकारी तथा कृषि व संबंधित विषयों से जुड़े लोग एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में न्यूजलैटर का विमोचन करते मंचासीन अतिथि एवं वैज्ञानिक।